भजन

तर्ज– खुदा भी आसमां से जब जिमीं पर

उल्ट माशूक हुए आशिक,ये उनकी ही नजाकत है
मिले वोहि नजर लेकर,ये उनकी ही सदाकत है

1– करी मुलाकात अपनों से,अर्स लज्जत को भर भर के
अर्श दिल कर दिया मोमिन,जाहेर बातून कर कर के
कदम बसते जहां उनके,रुहों की वोहि खिलवत है

2– कायम स□ुख के हैं हम मालिक,वो सुख कुछ और ढंग क
जुबां से न ब्यां होगा,वो सुख कुछ और रंग का है
बदलते हाल पल पल में,धाम की ये हकीकत है

3– कि हर इक आंख में बसता,समुंद्र मयकशी गहरा
नशा इत भी नशा उत भी,नशे का ही है हर चेहरा
पिया की मस्ती का आलम,यहीं अपनी न्यामत है

4– आंख ने आंख में झांका,तो चुपके से इश्क टपका
हुआ बेहाल वो लम्हा,नजारा देख कर सबका
तो मयखाना उछल आया,यहीं उनकी शनाख्त है